Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कजरी तीज पूजा विधि ॥

॥ जय कजरी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कजरी तीज पूजन की तैयारी ॥

कजरी तीज भाद्रपद कृष्ण तृतीया को मनाई जाती है। क्षेत्र के अनुसार पूजा में कजरी माता, नीमड़ी माता और शिव-पार्वती का स्मरण होता है। वर्ष और शहर के अनुसार तिथि तथा चंद्रोदय बदलते हैं; स्थानीय पंचांग देखें।

१. सुबह स्नान और संकल्प

प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। माता का स्मरण करें और परिवार के मंगल की कामना करें। व्रत का प्रकार अपनी परंपरा और स्वास्थ्य के अनुसार तय करें। निर्जला उपवास सभी के लिए आवश्यक न मानें; आवश्यकता हो तो जल या फल ग्रहण करें।

२. पूजा-स्थान सजाएँ

संध्या पूजन से पहले चौकी और पूजा की थाली तैयार करें। घर की रीति में नीमड़ी माता की पूजा होती हो तो नीम की डाल या प्रतीक को सुरक्षित स्थापित करें। शिव-पार्वती का चित्र हो तो उसे भी साफ स्थान पर रखें। दीपक स्थिर जगह जलाएँ।

३. सत्तू और भोग रखें

सत्तू उपलब्ध हो तो अपने घर की विधि से घी-शक्कर या गुड़ मिलाकर भोग तैयार करें। फल, मिठाई, जल, फूल और अक्षत पास रखें। सत्तू की तय मात्रा या आकार को सभी परिवारों के लिए बाध्यकारी न समझें।

॥ माता का पूजन और कथा ॥

४. गणेश स्मरण और पूजन

गणेशजी का स्मरण कर कजरी या नीमड़ी माता को प्रणाम करें। रोली, अक्षत, फूल और मौली अपनी रीति से अर्पित करें। धूप-दीप दिखाएँ और सत्तू या उपलब्ध नैवेद्य चढ़ाएँ। शिव-पार्वती की पूजा की परंपरा हो तो उन्हें भी पुष्प और प्रार्थना अर्पित करें।

५. व्रत कथा सुनें

पूजा के समय ब्राह्मण दंपति और सत्तू से जुड़ी कजरी तीज की प्रचलित कथा पढ़ें या सुनें। अन्य परिवारों में नीमड़ी माता या स्थानीय कथा भी सुनाई जाती है। अपने घर में जो कथा प्रचलित हो, उसे श्रद्धा और समझ के साथ सुनें।

६. आरती और प्रार्थना

कथा के बाद दीप दिखाकर आरती करें और परिवार में प्रेम, सहयोग तथा सुख के लिए प्रार्थना करें। उपलब्ध हो तो लोकपरंपरा के कजरी गीत भी गाए जा सकते हैं। गीत या जागरण के लिए स्वयं पर शारीरिक दबाव न डालें।

नीमड़ी माता की सजावट और पूजा का क्रम क्षेत्र-विशेष की रीति है। अपने यहाँ प्रचलित क्रम अलग हो तो वही अपनाएँ।

॥ कजरी माता सबका मंगल करें ॥

॥ चंद्र अर्घ्य और व्रत का समापन ॥

७. चंद्रमा को अर्घ्य

जिन परिवारों में चंद्र दर्शन का विधान है, वे अपने स्थान पर चाँद दिखाई देने पर जल से अर्घ्य दें। शांत मन से प्रणाम करें और परिवार के मंगल की प्रार्थना करें। चंद्रमा बादलों से ढका हो तो घर के बड़े या स्थानीय परंपरा के जानकार से मार्गदर्शन लें।

८. जल और प्रसाद से पारण

अर्घ्य के बाद अपनी परंपरा के अनुसार जल और सत्तू का प्रसाद ग्रहण कर व्रत खोलें। फिर आराम से भोजन करें और परिवार में प्रसाद बाँटें। चाँद निकलने का समय शहर और तारीख के अनुसार बदलता है; किसी दूसरे शहर का समय न अपनाएँ।

सुरक्षा और स्वास्थ्य

दीपक और धूप जलाते समय सावधानी रखें। गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी या नियमित दवाओं की स्थिति में लंबे उपवास का निर्णय चिकित्सकीय सलाह के अनुसार लें। चक्कर या कमजोरी महसूस हो तो तुरंत जल लें और जरूरत पड़ने पर चिकित्सा सहायता लें।

कजरी तीज की पूजा हरतालिका तीज से अलग अवसर पर होती है। उसकी अगले दिन पारण की रीति को यहाँ स्वतः लागू न करें।

॥ कजरी तीज की शुभकामनाएँ ॥